Literacy for a Billion

Movie: Bobby
Year: 1973

Song: Hum tum ek kamre mein
Lyricist: Anand Bakshi, Vithalbhai

बाहर से कोई
अन्दर ना आ सके
अन्दर से कोई
बाहर ना जा सके

सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो
सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो

हम तुम
एक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

हम तुम
इक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

तेरे नैनों की भूल भुलैयाँ में
बॉबी खो जाए

हम तुम
इक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

आगे हो घनघोर अँधेरा
बाबा मुझे डर लगता है
पीछे कोई डाकू लुटेरा
ऊँ क्यों डरा रहे हो

आगे हो घनघोर अँधेरा
पीछे कोई डाकू लुटेरा
ऊपर भी जाना हो मुश्किल
नीचे भी आना हो मुश्किल

सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो
सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो

हम तुम
कहीं को जा रहे हों
और रस्ता भूल जाएँ
हो हो

हम तुम
कहीं को जा रहे हों
और रस्ता भूल जाएँ

तेरी बैयाँ के झूले में सैयाँ
बॉबी झूल जाए

हम तुम
इक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

आ हा
आ हा
आ आ आ

आ आ आ आ आ

बस्ती से दूर
पर्वत के पीछे
मस्ती में चूर
घने पेड़ों के नीचे
अनदेखी अनजानी सी
जगह हो
बस एक हम हों
दूजी हवा हो
सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो
सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो

हम तुम
एक जंगल से गुज़रें
और शेर आ जाए

हम तुम
एक जंगल से गुज़रें
और शेर आ जाए
शेर से मैं कहूँ
तुमको छोड़ दे
मुझे खा जाए

हम तुम
इक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

ऐसे क्यों खोए खोए हो
जागे हो कि सोए हुए हो
क्या होगा कल
किसको ख़बर है
थोडा सा मेरे दिल में
ये डर है

सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो
सोचो कभी ऐसा हो
तो क्या हो

हम तुम
यूँ ही हँस खेल रहे हों
और आँख भर आए
हम तुम
यूँ ही हँस खेल रहे हों
और आँख भर आए

तेरे सर की क़सम
तेरे ग़म से
बॉबी मर जाए

हम तुम
इक कमरे में बंद हों
और चाबी खो जाए

तेरे नैनों की भूल भुलैयाँ में
बॉबी खो जाए

हम तुम
हम तुम
इक कमरे में बंद हों
इक कमरे में बंद हों

और चाबी खो जाए
और चाबी खो जाए
और चाबी खो जाए
और चाबी खो जाए
खो जाए

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.